Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 2

राजा, किसान और नगर
(आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएं)

भाग - 3

मौर्य साम्राज्य

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

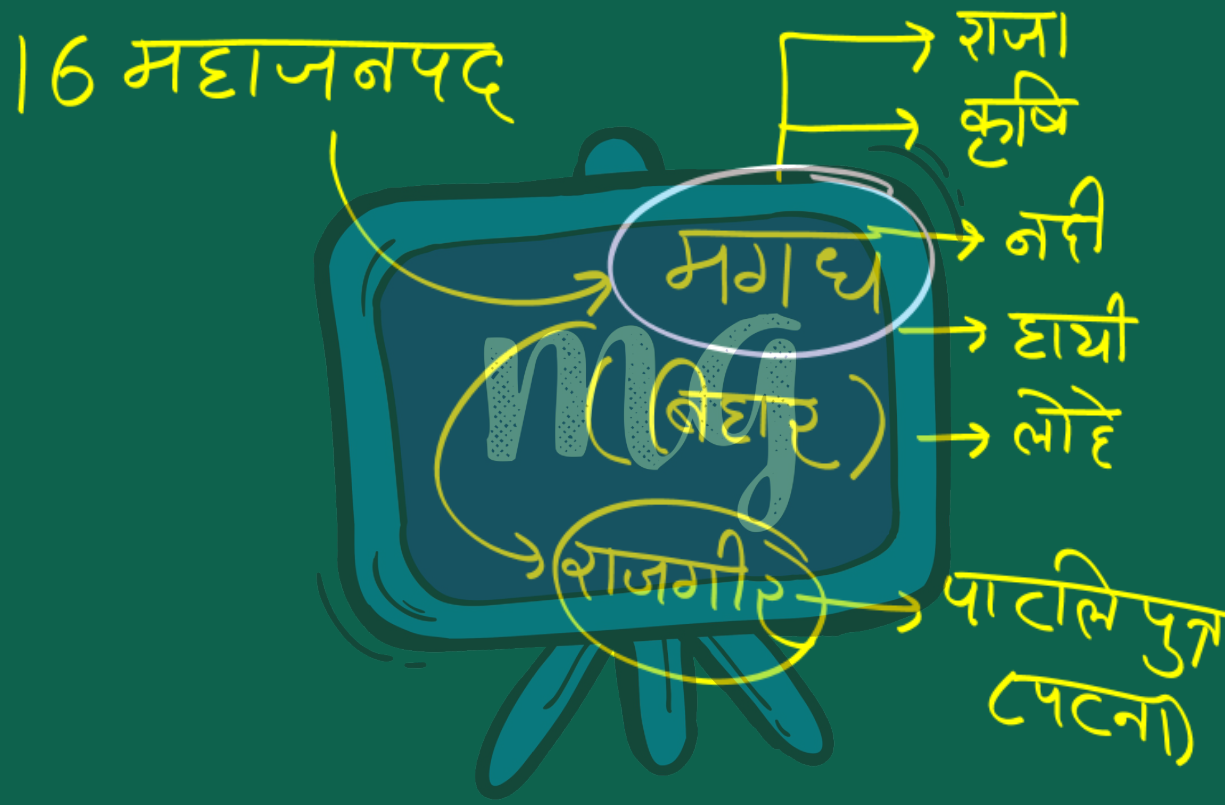

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

हर्यांक वंश (544-492) ईसा पूर्व

शिशुनाग वंश (413-345) ईसा पूर्व

नन्द वंश (345-322) ईसा पूर्व



एक आरम्भिक साम्राज्य : (321 ई. पू. – 185 ई. पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य : (322 – 298 ई. पू.)
- बिन्दुसार : (298 – 271 ई. पू.)
- असोक : (269 – 232 ई. पू.)
- कुणाल : (232 – 228 ई. पू.)
- दशरथ : (228 – 224 ई. पू.)
- सम्प्रति : (224 – 215 ई. पू.)
- शालिसुक : (215 – 202 ई. पू.)
- देव वर्मन : (202 – 195 ई. पू.)
- शतधन्वन : (195 – 187 ई. पू.)
- वृहद्रय : (187 – 185 ई. पू.)

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

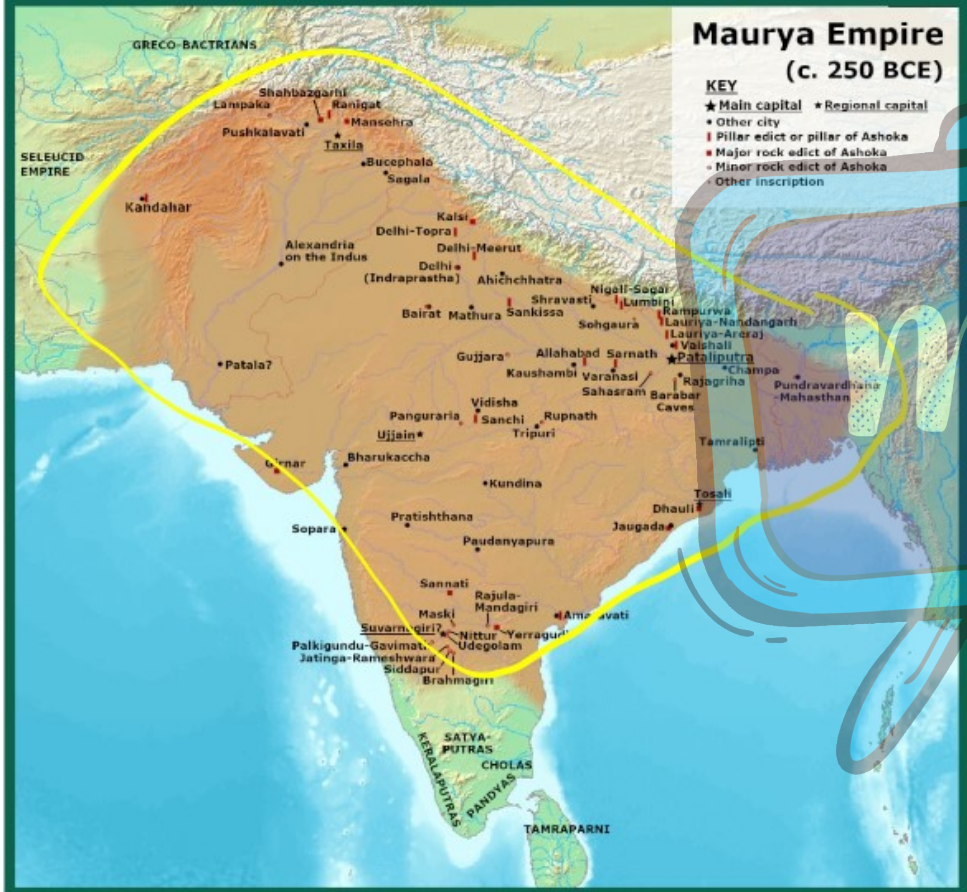

- मगध के विकास के साथ साथ मौर्य साम्राज्य का उदय हुआ।
- मौर्य समाज के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य (321 ई. पू.) का शासन पश्चिमोत्तर में अफगानिसतान तथा बलुचिस्तान तक फैला था।
- उसके पौत्र असोक को आरंभिक भारत का सर्वप्रसिद्ध शासक माना जा सकता है, कलिंग (उड़ीसा) पर विजय प्राप्त की।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



जानकारी के स्त्रोत !

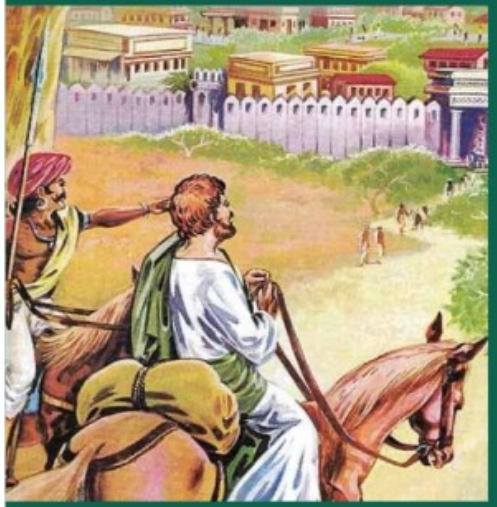

इंण्डिका

अर्थशास्त्र

जैन, बौद्ध संस्कृत ग्रंथ

मौर्य वंश के बारे में जानकारी प्राप्त करना:

मौर्य साम्राज्य के इतिहास की रचना के लिए इतिहासकारों ने विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया।

1. साहित्यिक स्त्रोत : मौर्यकालीन इतिहास के पुर्ननिर्माण हेतु समकालीन रचनाऐं मूल्यवान सिद्ध हुई।

(a) चंद्रगुप्त मौर्य के दरबवार में आये यूनानी राजदूत मेगस्थनीज द्वारा 'इण्डिका' में लिखा गया विवरण। जिसके अब कुछ अंश ही उपलब्ध है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



मौर्य

अभि मूर्तियां

बिंदुसार

अशोक

(b) चंद्रगुपत के मंत्री कौटिल्य या चाणक्य द्वारा लिखी गयी 'अर्थशास्त्र'

(c) मौर्य शासकों का उल्लेख परवर्ती जैन, बौद्ध और पौरागिक ग्रंथों द्वारा संस्कृत वाङ्मय में भी मिलता है।

2. पुरातात्विक स्त्रोत :

(a) पत्थरों और स्तम्भों पर मिले असोक के अभिलेख सबसे मूल्यवान स्त्रोत हैं।

(b) मौर्यकालीन मूर्तियां भी इसके स्त्रोत हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

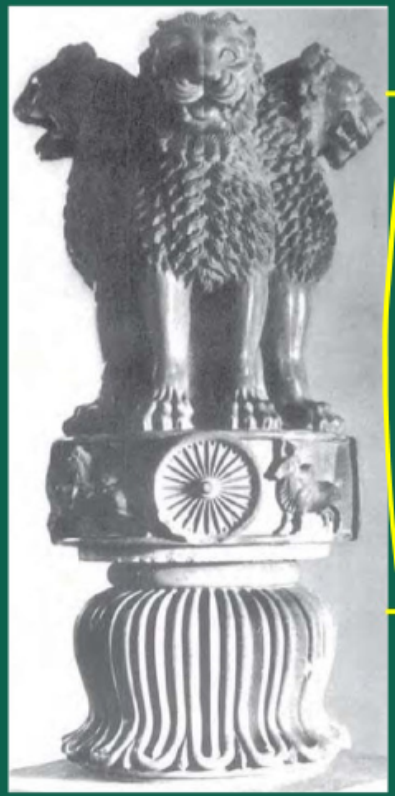

प्रजा

अधिकारियों

संदेश

धम्म प्रचार

- असोक वह पहला शासक था जिसने अपने अधिकारियों और प्रजा के लिए संदेश प्राकृतिक पत्थरों और पॉलिश किये हुए स्तंभों पर लिखवाये थे।
- असोक ने अपने अभिलेखों के माध्यम से धम्म का प्रचार किया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q. मौर्य साम्राज्य के ऐतिहासिक स्त्रोत पर चर्चा करें ?

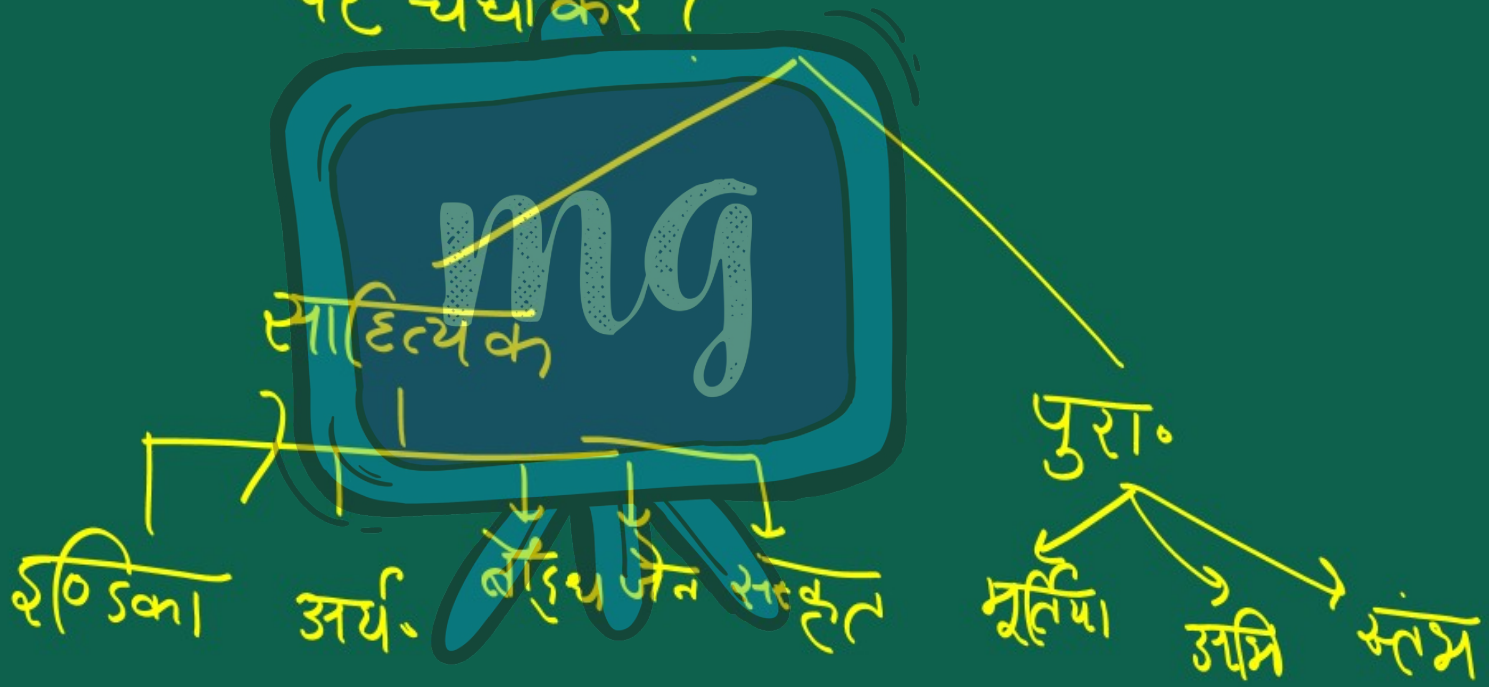

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

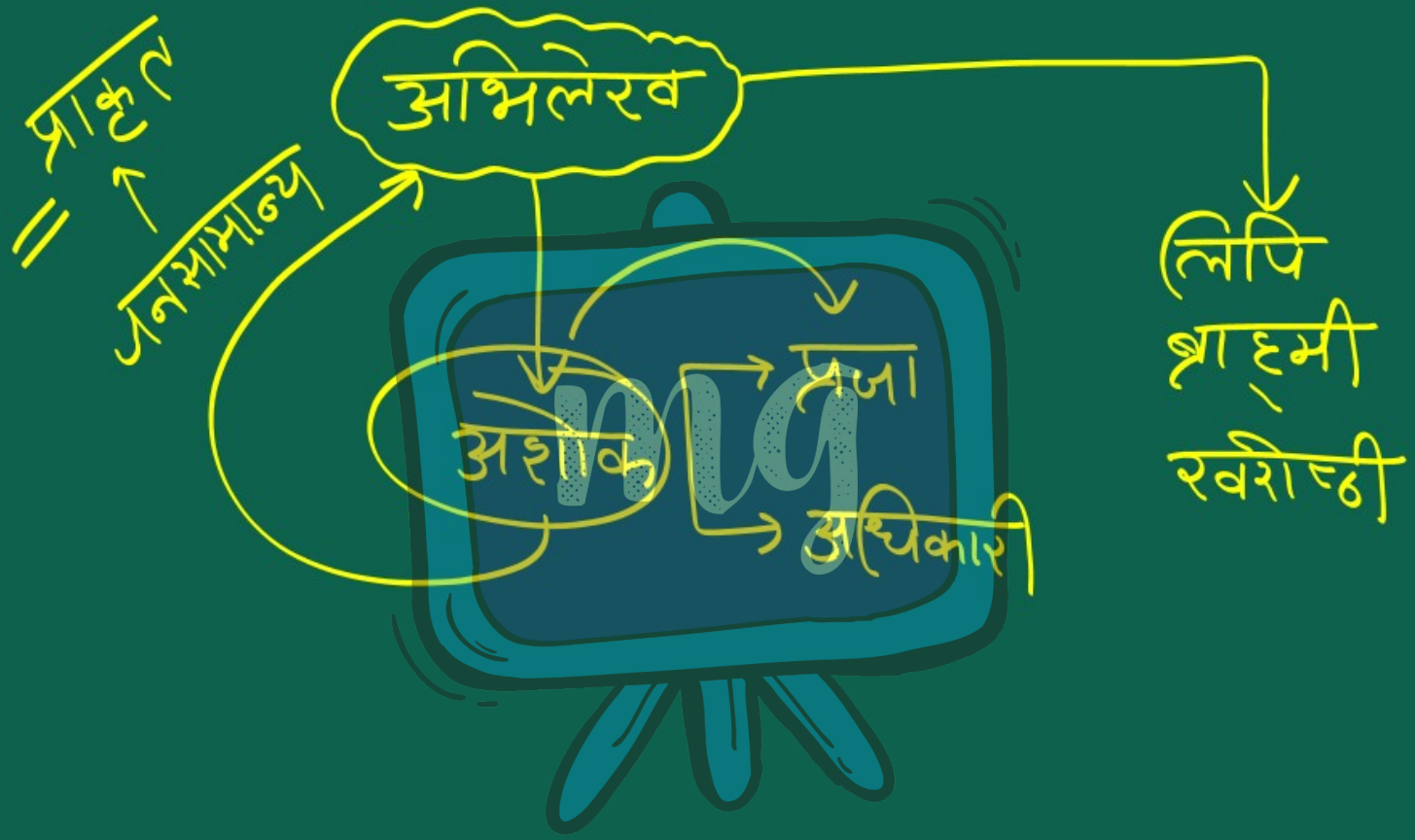

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

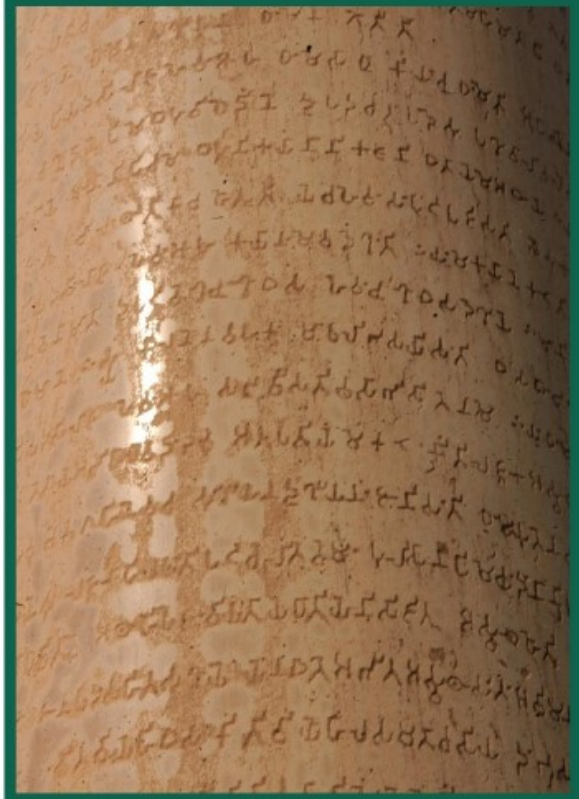

भाषाऐं और लिपियां :

भाषा : जो बोलने में प्रयुक्त हो जैसे – प्राकृत, अरामेइक, यूनानी, हिन्दी।

लिपि : जो लिखने में प्रयुक्त हो – देवनागिरी लिपि, ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि।

असोक के अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा के हैं जबकि पश्चिमोत्तर से मिले अभिलेख – अरामेइक व यूनानी भाषा के है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

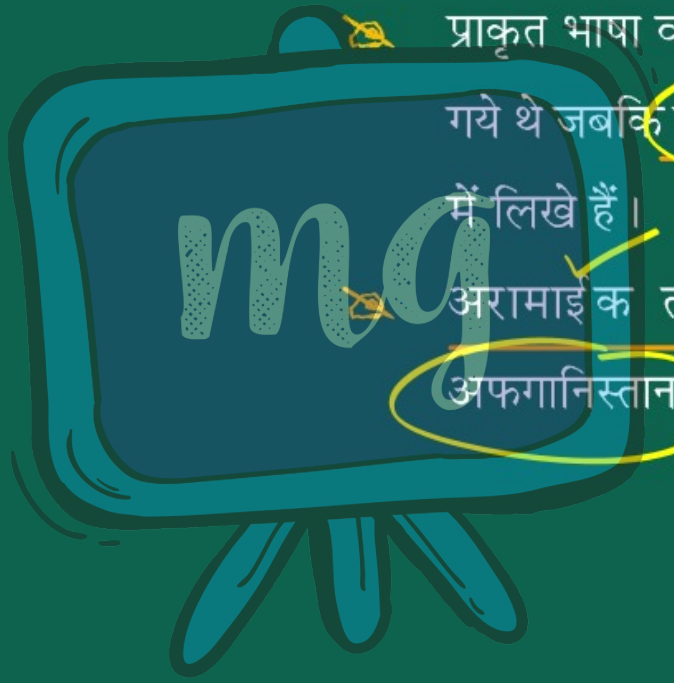

प्राकृत भाषा वाले अभिलेख ब्राह्मी लिपि में लिखे गये थे जबकि पश्चिमोत्तर के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में लिखे हैं।

अरामाइक तथा यूनानी लिपियों का प्रयोग अफगानिस्तान के अभिलेखों में किया गया है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q. अशोक के अभि० हमें किन भाषाओं में देखने को मिलते हैं?

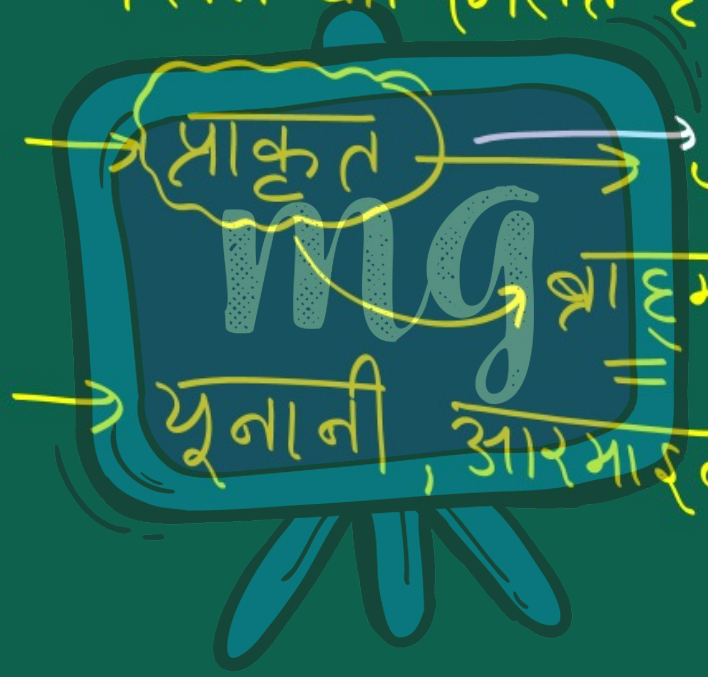

प्राकृत → जनसामान्य

ब्राह्मी

यूनानी, आरमाइक → पश्चिमोत्तर

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

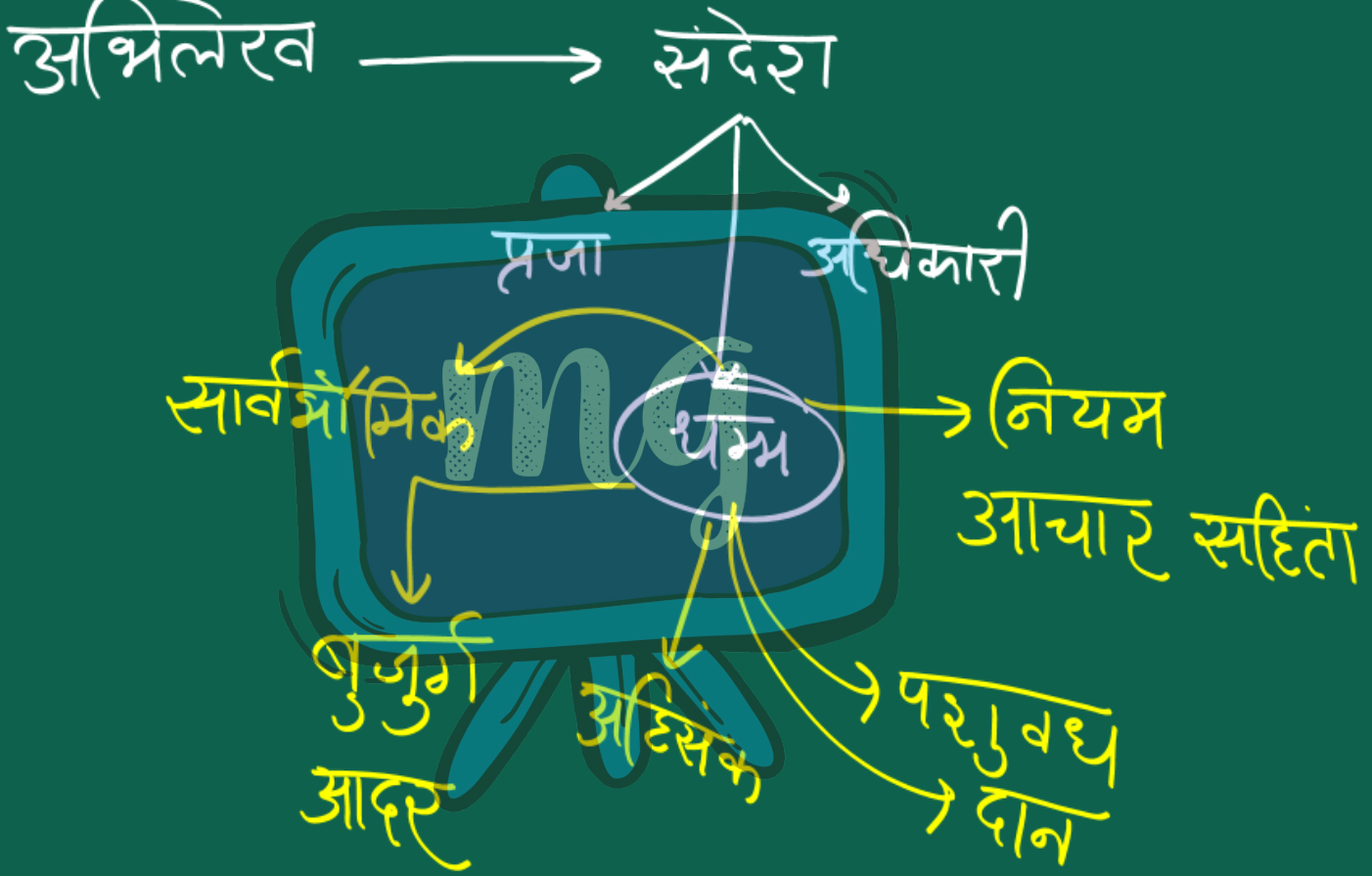

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



असोक का धम्म :

- बड़ों के प्रति आदर।
- सन्यासियों और ब्राह्मणों के प्रति उदारता।
- सेवकों और दासों के साथ उदार व्यवहार।
- दूसरे के धर्मों और परंपराओं का आदर शामिल है।

प्राणियों का वध न करना। जीव हिंसा न करना।

धम्म के सिद्धांत बहुत ही साधारण तथा सार्वभौमिक थे।

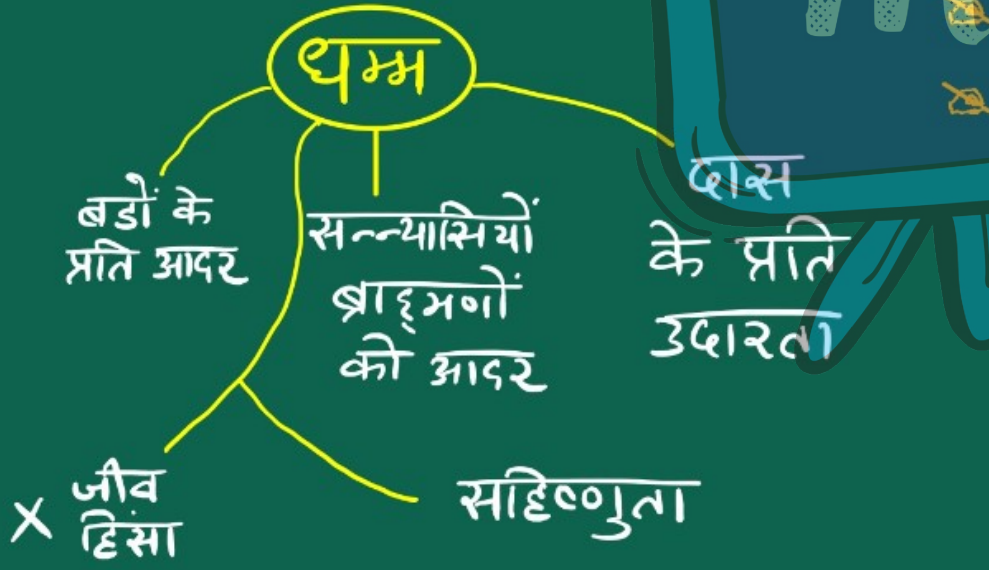

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

धम्ममहामात्त

धम्म के प्रचार प्रसार





- असोक के अनुसार धम्म के माध्यम से लोगों का जीवन इस संसार में और इसके बाद के संसार में अच्छा रहेगा।
- धम्म के प्रचार के लिए धम्म महामात्र नाम से विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की गयी।
- धम्म के प्रचार के द्वारा असोक ने अपने साम्राज्य को अखंड बनाये रखने का प्रयास किया।
- अपनी प्रजावत्सलता और अहंकार रहित हृदय की उदारता व कृपालुता में असोक पूरे विश्व के राजाओं में नितांत एक ही था। भारतीय इतिहास गगन का वह सबसे अधिक चमकने वाला तारा है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. अशोक के धम्म को समझाइए ?

Q. अशोक ने धम्म के प्रचार के लिए कि नकी नियुक्ति करी ?

